विशेषण

विशेषण की परिभाषा

संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते
हैं; जैसे - काला, छोटा, लम्बा, ऊँचा, भारी, सुन्दर, एक, दो आदि।

विशेष्य -

जिस शब्द कि विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है;

जैसे - नीला छाता।

यहाँ पर नीला – विशेषण है।

छाता – विशेष्य है।

कई बार विशेषण शब्द विशेष्य से पहले भी आते हैं और बाद में भी आते हैं; जैसे -

(क) थोड़ा-सा पानी लाओ। (पहले आने वाले विशेषण शब्द)

(ख) एक मीटर धागा लाना। (पहले आने वाले विशेषण शब्द)

(क) यह मकान ऊँचा है। (बाद में आने वाले विशेषण शब्द)

(ख) नींबू खट्टा है। (बाद में आने वाले विशेषण शब्द)

कभी-कभी विशेष्य के अनुसार विशेषण के लिंग-वचन भी बदल जाते हैं; जैसे -

अच्छा – लड़का = अच्छे लड़के

अच्छी – लड़की = अच्छी लड़कियाँ

विशेषण के भेद -

विशेषण के चार भेद होते हैं :-

(क) गुणवाचक विशेषण

(ख) परिणामवाचक विशेषण

(ग) संख्यावाचक विशेषण

(घ) संकेतवाचक विशेषण अथवा सर्वानामिक विशेषण

गुणवाचक विशेषण

जो विशेषण शब्द (संज्ञा व सर्वनाम) के गुण दोष, रंग, आकार, अवस्था, स्थिति आदि विशेषता का बोध कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(क)	भाव	-	अच्छा, बुरा, डरपोक, शिष्ट, कायर, वीर आदि।
(ख)	रंग	-	लाल, नीला, पीला, हरा, काला, सफ़ेद, चमकीला, फीका आदि।
(ग)	दशा	-	पतला, मोटा, सूखा, गाढ़ा, पिघला, भारी, गीला, गरीब, अमीर, रोगी, स्वस्थ, पालतू आदि।
(घ)	आकार	-	गोल, सुडौल, नुकीला, समान, नाटा, छोटा, लम्बा, चौड़ा, पतला, दुबला आदि।
(ङ)	समय	-	अगला, पिछला, दोपहर, संध्या, सवेरा, प्रातःकाल, रात्रि आदि।
(च)	स्थान	-	बाहरी, भीतरी, पंजाबी, जापानी, पुराना, ताज़ा, आगामी आदि।

(छ) गुण - भला, सुन्दर, बुरा, मीठा, दानी, खट्टा, सच, झूठ, सीधा, सच्चा, आदि।

(ज) दिशा - उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी आदि।

उदाहरण -

(क) तुम अच्छे व्यक्ति हो।

(ख) चिड़िया नीले रंग की है।

(ग) राम बहुत मोटा है।

(घ) उसकी नाक बहुत पैनी है।

(ङ) तुम दोपहर को घर पर आना।

(च) आगामी दिनों में सरकार गिरने वाली है।

(छ) करण बड़ा ही दानी व्यक्ति था।

(ज) जावेद उत्तर दिशा में गया है।

संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषण :-

जिन विशेषण शब्दों से (संज्ञाव सर्वनाम) की संख्या का ज्ञान(बोध) हो,वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे- एक, दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों इत्यादि।

उदाहरण-

एक फूल देना।

तुम दो रसगुल्ले खा चुके हो।

मेरठ जाने के लिए 200 रूपए लगते हैं।

थोड़े-से गुलाब जामुन दो।

संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद कहे जाते हैं :-

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(क) निश्चित संख्यावाचक विशेषण :-

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का पता चले, उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। दूसरे शब्दों में ये भी कह सकते हैं जिन शब्दों से गिनती का ज्ञान हो, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे-

1.एक बच्चा खेल रहा है।

2.100 रूपए दीजिए।

3.कल तुम्हारे यहाँ दो मित्र आए थे।

4.चार केले खाओ।

5.तीन थैलियाँ देना।

6.तुम द्वितीय श्रेणी में पास हुए हो।

7.श्याम तीसरे नम्बर का भाई है।

8.मैं तुमसे दुगुना खाना खा सकता हूँ।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :-

जिन विशेषण शब्दों में अनिश्चितसंख्या का बोध हो, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

1.कुछ लोग खड़े हैं।

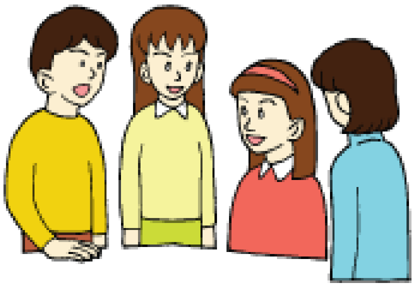

2.थोड़े आदमी काम पर आए हैं।

3.कई लोग खड़े हैं।

4.ज़्यादा गोलियाँ मत खाओ।

परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से (संज्ञा व सर्वनाम) की मात्रा अथवा नाप-तोल का ज्ञान हो, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे - किलोमीटर, मीटर, आधा किलो, पावभर, गज, सेंटीमीटर, लीटर इत्यादि।

उदाहरण -

(क) बाज़ार से थोड़ा गुड़ लाना।

(ख) एक किलो का एरियल देना।

(ग) शाहदरा पाँच किलोमीटर आगे है।

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद माने जाते हैं :-

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :-

जिन शब्दों से वस्तु की निश्चित मात्रा का पता चलता (ज्ञान हो) है, उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

1. आपकी पेंट में सवा दो मीटर कपड़ा लगेगा।

2. 2 किलो दाल देना।

3. 100 गज ज़मीन चाहिए।

4. हमें 50 किलोमीटर तय करना है।

5. पावभर सूजी लेते आना।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :-

जिन शब्दों से वस्तु की अनिश्चित मात्रा का पता चलता हो (ज्ञान हो), उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे -

1. थोड़ा-सा दूध दे दो।

2. कुछ किलो सेब खरीद लो।

3. थोड़ी-सी चाय बना दो।

4. कितने किलोमीटर गाड़ी चली है?

सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे -

(क) वह छात्रा तृतीय आई है।

(ख) वहाँ कौन आदमी खड़ा है?

(ग) यह महान राजा है।

(घ) यह किताब तुम्हारी है।

सर्वनाम व सार्वनामिक विशेषण में अन्तर :-

जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा शब्द के स्थान पर हो, उसे सर्वनाम कहते हैं; जैसे - वह चेन्नई गया। इस वाक्य में वह सर्वनाम है। जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा से पूर्व अथवा बाद में विशेषण के रूप में किया गया हो, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे - वह गाड़ी आ रही है। इसमें 'वह' शब्द गाड़ी का विशेषण है, इसलिए यह सार्वनामिक विशेषण है।

प्रविशेषण :-

प्रविशेषण के विशेषणात्मक शब्द होते हैं जो विशेषण की विशेषता बताते हैं; जैसे -

(क) लवीन बहुत मेहनती लड़का है। (बहुत-प्रविशेषण, मेहनती-विशेषण)

(ख) मैंने बहुत बड़ा हाथी देखा है। (बहुत-प्रवीशेषण, बड़ा-विशेषण)

(ग) हल्के नीले रंग लगाओ। (हल्के-प्रविशेषण, नीले-विशेषण)

विशेषणों की रचना :-

रचना की दृष्टि से विशेषण तीन प्रकार के होते हैं :-

(क) **मूल विशेषण :-**

कुछ शब्द मूल रूप से ही विशेषण होते हैं; जैसे - सुन्दर, ऊँचा, काला आदि।

(ख) **उपसर्ग प्रत्यय जोड़कर :-**

उपसर्ग लगाकर – अटल, निराकार

प्रत्यय लगाकर – इमारती, व्यावहारिक

(ग) **समास का प्रयोग कर :-**

दो से या दो शब्दों को मिलाकर भी विशेषण बनाए जाते हैं; जैसे -

1. टेढ़ा-मेढ़ा

2. चलता-फिरता

अन्य उदाहरण :-

संज्ञा से विशेषण बनाना -

संज्ञा	विशेषण
अंश	आशिक

	अर्थ	आर्थिक
	धर्म	धार्मिक
	दिन	दैनिक
	इतिहास	ऐतिहासिक
	अंक	अंकित
	सुरभि	सुरभित
	कुसुम	कुसुमित
	तरंग	तरंगित
प्रत्यय	**संज्ञा**	**विशेषण**
इल	पंक	पंकिल
	फेन	फेनिल

इम	स्वर्ण	स्वर्णिम
ई	भोग	भोगी
	रोग	रोगी
ईन, ईण	कुल	कुलीन
	ग्राम	ग्रामीण
ईय	आत्मा	आत्मीय
	जाति	जातीय
आलु	दया	दयालु
	कृपा	कृपालु
	श्रद्धा	श्रद्धालु
वी	यश	यशस्वी
मय	तन	तनमय
	सुख	सुखमय
वान	धन	धनवान
	कृपा	कृपावान

वती (स्त्री)	पुत्र	पुत्रवती
	रूप	रूपवती
	धन	धनवती
मान	विराज	विराजमान
	चलय	चलयमान
मती (स्त्री)	श्री	श्रीमती
	बुद्धि	बुद्धिमती
रत	ध्यान	ध्यानरत
स्थ	निकट	निकटस्थ
	समीप	समीपस्थ
निष्ठ	कर्त्तव्य	कर्त्तव्यनिष्ठ
	धर्म	धर्मनिष्ठ

सर्वनाम से विशेषण बनाना -

सर्वनाम	विशेषण

कौन यह वह आप	कैसा ऐसा वैसा आप-सा

क्रिया से विशेषण बनाना -

क्रिया	**विशेषण**
पठ पालना पूज वंद	पठित पालने वाला पूजनीय वंदनीय

अव्यय शब्दों से विशेषण बनाना -

अव्यय	**विशेषण**
आगे ऊपर भीतर नीचे आगे	अगला ऊपरी भीतरी निचला अगला